Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

वाश चित्रण में साहित्य एवं भक्ति का संगम : शैलेंद्रनाथ डे एवं क्षितिंद्रनाथ मजुमदार का कला विस्तार

आस्था कुमावत*

* शोधार्थी (चित्रकला) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – भारतीय कला धारा में नवीन प्रयोगों के साथ विकास देखा गया है जिसने भारतीय कला को और अधिक विकसित व प्रसारित किया जिसका प्रमुख उदाहरण बंगाल शैली है जिसके प्रचार के साथ भारत में पुनर्जागरण आंदोलन का प्रसार हुआ जिससे हमारी भारतीय कला विदेशी कला पद्धति की जकड़न से मुक्त हो पाई। इसमें मुख्य रूप से अवनींद्रनाथ टैगोर और उनके शिष्यों की बात करना अधिक सार्थक होगा क्योंकि इन्हीं के प्रयोगों से ही ये विधा इतनी विकसित और प्रसारित हो पाई जिनमें मुख्य रूप से हम बात करे शैलेन्द्र नाथ डे एवं शीतिंद्रनाथ मजुमदार की तो एक ने साहित्यिक व काव्यात्मक रूप से इस तकनीक को आगे बढ़ाया एवं एक ने इसे धार्मिक व भक्तिरूप में प्रसारित करा।

शब्द कुंजी – बंगाल शैली, वाश, तकनीक, धर्म, कला, साहित्य।

प्रस्तावना – कला में समय रहते परिवर्तन आना, अर्थात, कला का और अधिक विकसित होना कहलाया जा सकता है, क्योंकि परिवर्तन ही जीवन का मूल सत्य है। कला के क्षेत्र में नित नए परिवर्तनों के साथ कई विधाएं पनपती व कई विलुप्त होती जाती हैं, जिसके चलते कई कला–विधाओं के स्वरूप हमारे सामने विकसित होते हैं। ऐसा ही कुछ परिवर्तन पुनर्जागरण काल में देखा गया जब अंग्रेजों द्वारा भारत पर पूर्ण रूप से हुकूमत चलाने व कलात्मक कार्यों में भी अपनी विदेशी भद्दी शैली स्थापित करने पर जो रोष कलाकारों में देखा गया, उससे तंग आकर कलाकारों द्वारा अपनी नवीन शैली विकसित करने, जिसमें भारतीय धर्म साहित्य व अजंता, एलोरा का सम्मिश्रित रूप व जापान की वॉश पद्धति का समावेश कर एक नवीन आधुनिक शैली 'बंगाल शैली' को जन्म दिया गया। जिसके चलते कलाकारों द्वारा अपनी भारतीय धार्मिक शैली को अतीत के गर्त से निकाला गया व भारत की धरती पर पनप रही विदेशी तकनीक से निजात पाया गया। भारतीय शैली इतनी विकसित रही है कि अंग्रेज भी इसकी व्याख्या करने से पीछे नहीं हटते थे। इन्हीं में एक थे ई.बी. हैवल जिन्होंने भारतीय कला के समृद्ध इतिहास को जाना व समझा एवं भारतीय कलाकारों को पुन: अपनी शैली की ओर लौटने की ओर प्रोत्साहित किया। इन्होंने इस कार्य के लिए बंगाल के प्रसिद्ध कलाकार श्री अवनीन्द्रनाथ टैगोर का साथ पाया जिन्होंने अपनी भारतीय शैली में प्रयोग कर एक नई प्रसिद्ध शैली को जन्म दिया। जिसे बंगाल शैली के नाम से जाना जाता है। इन्होंने भारतीय पौराणिक कथाओं को अपने चित्रों के विषय के रूप में लिया साथ ही अजंता एलोरा की लयात्मक रेखांकन के साथ प्राचीन भारतीय अलंकृत शैली के साथ जापान की वाश तकनीक के आधार पर रंगांकन के साथ एक विशिष्ट शैली का निर्माण किया जिसने भारतीय कला धारा को नया रूप दिया।

अवनींद्रनाथ टैगोर ने आगे चलकर इस शैली को अधिक से अधिक उपयोग में लाने के लिए प्रेरित किया व अपने छात्रों के द्वारा इसे जन –जन तक पहुंचाया। इनके द्वारा शिक्षित कई कला विद्यार्थियों ने अपने समय में इस तकनीक में खूब प्रसिद्धि पाई जिनमें मुख्य रूप से नंदलाल बोस, असित कुमार हालदार, शैलेंद्रनाथ डे, क्षितिंद्रनाथ मजुमदार, अब्दुल रहमान चुगताई आदि विशेष उल्लेखनीय कलाकार रहे है। इन्होंने अपने गुरु से प्राप्त ज्ञान को संजोकर रखने के बजाए आगे प्रसारित किया जिससे इन्होने अपने गुरु के द्वारा चलाए गए पुनर्जागरण आंदोलन में पूर्ण रूप से सहयोग किया। यहां हम बात कर रहे है शैलेंद्रनाथ डे एवं क्षितिंद्रनाथ मजुमदार की आप दोनों ही वाश तकनीक के जाने माने व कुशल कलाकार रहे है, इनके कलात्मक कार्यों के साथ यह तकनीक अपनी ऊंचाइयों तक पहुंची।

शैलेंद्रनाथ डे (1890–1971)

इनका जन्म इलाहाबाद में हुआ था। लेखिका शची रानी गुर्टू के अनुसार मानव–जीवन के मूक भावों को प्रत्यक्ष करने वाली कला ही एक चाक्षुष माध्यम है, इस सहज विश्वास को लेकर अवनि बाबू की छत्रछाया में शैलेंद्रनाथ डे की कला की अनेक नवीनताओं और विशेषताओं को लेकर अवतरित हुई।इन्होंने अपनी कला शिक्षा कोलकाता में पूर्ण की। बनारस के 'कला भवन' और कोलकाता के इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट में कुछ अरसे तक काम करने के पश्चात, वह अपनी सृजन प्रेरणा को राजस्थान तक ले गए और जयपुर में आर्ट स्कूल में प्राध्यापक रहकर कला के व्यापक प्रसार में योग दिया। यहां की आर्ट एकेडमी में कला की साधना में रत रहकर उसे समुन्नत बनाने की भरसक चेष्टा की।(1)

लेखक आर. बी.गौतम क अनुसार 'भारत की स्वतंत्रता से पूर्व यहां की कला में पूर्व लघु चित्र शैलियों की स्मृतियों ने परावर्तित होकर धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक और पूर्व समय के लोकानुरंजक विषयों के चित्रण की परम्परा का अनुसरण किया परंतु स्वतंत्रता के पश्चात बंगाल के पुनर्जागरण के प्रभाव, देश प्रेम और अपनी लोक संस्कृति के प्रति मोह, समाजवादी विचारधारा के प्रचार के कारण यहां के कलाकारों में अपनी मिट्टी की गंध को कला और साहित्य में तूल देना प्रारंभ किया।'(2)व अपनी प्राचीन कला पद्धति का पालन कर कार्य करना उचित समझा।

शैलेंद्रनाथ ने अपनी रचनाओं में अपने कलागुरु अवनींद्रनाथ टैगोर द्वारा विकसित पद्धति का पालन करने की कोशिश की है। इन्होंने अपने बचपन का काफी समय इलाहाबाद में बिताया। अपने कई कार्यों में कलागुरु अवनींद्रनाथ टैगोर की शैली से प्रभावित कार्यों को करना प्रारंभ किया उन्होंने भारतीय सजावटी शैली का पालन करने का एक उल्लेखनीय प्रयास किया है।लेखिका रीता प्रताप के अनुसार इनकी कला प्रतिभा जानकर वाराणसी के रायकृष्णदास ने इन्हें 'मेघदूत' पर चित्रावली तैयार करने के लिए प्रेरित किया और कुछ समय में ही शैलेंद्रनाथ द्वारा इस कार्य को पूर्ण कर दिया गया। जिसमें 'विरही यक्ष', 'विरहिणी यक्षिणी' व 'रामगिरी पर्वत पर विरही यक्ष' शीर्षक चित्र विशेष उल्लेखनीय हैं।इनके प्रारंभिक चित्रों में 'यशोदा और बालक कृष्ण', 'यक्ष पत्नी', 'वनवासी यक्ष', 'चलते-फिरते भावमुद्रा', 'नृत्य भंगिमा' आदि सुंदर चित्र हैं।(3)

कलकत्ता से चित्रकला की शिक्षा पूर्ण कर सन् 1924 ई. में शैलेंद्रनाथ जी राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स में एक शिक्षक के रूप में आए। यहां उपाचार्य के पद पर रहकर इन्होने बंगाल स्कूल की वाश तकनीक का प्रसार किया। इससे राजस्थान की कला में नव प्रयासों के साथ आधुनिक तकनीक व विचारधारा, कल्पना व तकनीक के साथ विभिन्न कला कार्य किए जाने प्रारंभ हुआ। लेखिका ममता चतुर्वेदी के अनुसार 'शैलेन्द्र नाथ डे ने राजस्थान कि मरुभूमि को अपनी कला से अभिभूत किया तथा वाश तकनीक से परिचित करवाया।'(4) जिसकी शिक्षा इन्होंने कलकत्ता में अवनींद्रनाथ से ली थी, उसी वाश तकनीक को राजस्थान में प्रसारित करने का कार्य इनके द्वारा किया गया। 'यह जयपुर के महाराजा सवाई रामसिंह द्वारा स्थापित संस्था थी,जिसे आपके प्रयासों से नव जीवन मिला तथा इस प्रदेश में प्रथम श्रेणी की मुख्य शिक्षण संस्थाओं में स्थान प्राप्त हुआ। दूर-दूर से आए कला शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के कारण यह कला संस्थान सुर्खियों में रही। यहां शैलेन्द्र नाथ डे द्वारा कई प्रमुख कलाकारों को अपनी छत्रछाया में वाश तकनीक में पारंगत किया। यहां कही कलाकारों ने नव वाश तकनीक में कार्य कर ख्याति अर्जित की मुख्य रूप से इनके शिष्यों में श्री रामगोपाल विजयवर्गीय, श्री देवकी नंदन शर्मा, गोपाल घोष तथा शंभुनाथ मिश्र शामिल हैं।(6)

यहां रहकर इन्होंने 'भारतीय चित्रकला पद्धति' नामक पुस्तक की रचना की। यहां रहकर इन्होंने राजस्थानी शैली जो परिवर्तित होकर अंग्रेजों के समय में विदेशी तकनीकों के पीछे दब गई थी, उस लघु चित्र शैली को पुन: प्रकाश में लाए और अपने साथ लेकर आए अवनी बाबू की बंगाल वॉश तकनीक को भी विकसित किया जिसके साथ इन्होंने राजस्थान की सुप्त होती कला को फिर से नया रूप प्रदान किया व राजस्थान में इस तकनीक का विकास किया एवं राजस्थान कि कला में बंगाल वाश तकनीक के मिश्रण के साथ नव कला को जीवित करने का प्रयास किया।

ममता चतुर्वेदी द्वारा अपनी पुस्तक में शैलेंद्र नाथ जी के द्वारा कहा गया है किकृ 'चित्रकला संसार की वह सजीव वस्तु है जिससे हम कभी पृथक नहीं हो सकते। हमारे जीवन में प्रत्येक शुभाशुभ अवसर पर चित्रकला दृष्टि में आती है। मानव जो कुछ देखता या अनुभव करता है उन्हीं वस्तुओं को वह कागज, दीवार, पत्थर आदि पर रंग एवं तूलिका द्वारा चित्रित करता है। चित्रितावस्था के पश्चात हम उस अनुभव के मूल परिणाम को चित्र और उसके विषय की चित्रण कहते हैं। जीवन के अनुभवों का निरीक्षण की परिधि में समेट कर जो व्यक्ति रंग एवं रेखाओं द्वारा सबके सामने रखता है उसे ही वस्तुत: चित्रकार कहते हैं।'(8)

शीर्षक - मेघदूत

इस पेंटिंग में शैलेंद्र नाथ डे ने हिंदू पौराणिक कथाओं के कार्यों से एक महत्वपूर्ण क्षण को दिखाया है। इसमें कालिदास की क्लासिकल संस्कृत कविता, 'मेघदूत' (बादल संदेशवाहक) पर आधारित पेंटिंग्स की एक श्रृंखला शामिल है।इस श्रृंखला में, डे ने एक यक्ष की मार्मिक कहानी को दर्शाया है, जिसे निर्वासित कर दिया गया है और अपनी प्रेमिका से अलग कर दिया गया है, और वह एक गुजरते हुए बादल के माध्यम से उसे संदेश भेजता है। पेंटिंग्स में लालसा और भक्ति का सार दिखाया गया है, जो कविता के मुख्य विषय हैं।डे की 'मेघदूत' श्रृंखला नाजुक रेखाओं और नरम रंग पैलेट की विशेषता है, जिसे वॉश तकनीक के माध्यम से प्राप्त किया गया है। यक्ष के उनके चित्रण में अक्सर उसे चिंतनशील मुद्रा में दिखाया गया है, जो प्रकृति के तत्वों से घिरा हुआ है जो भावना को बढ़ाते हैं। इनके द्वारा निर्मित यह पेंटिंग इलाहाबाद के संग्रहालय में संग्रहित है।



इनके चित्रों में लयात्मकता, भावाभिव्यंजकता, उदात्त सौंदर्य तथा संतुलित ज्यामितिक रेखांकन उतरा है जिसे 'यक्ष-पत्नीश तथा 'वनवासी यक्षश नामक चित्रों में देखा जा सकता है। आपकी कला शैली परंपरागत भारतीय कला से प्रभावित एवं अलंकरण प्रधान थी। 'कौशल्या से आज्ञा लेते रामश, 'गरुड़सीन अष्टभुज विष्णु', 'यशोदा व कृष्ण' आदि उल्लेखनीय चित्र हैं।(9) इनके प्रमुख शिष्यों में श्री रामगोपाल विजयवर्गीय,श्री देवकीनन्दन शर्मा,गोपाल घोष तथा शंभूनाथ मिश्र जैसे विख्यात चित्रकारों ने इनसे शिक्षा ग्रहण की। सन् 1951 ई में वे राजस्थान आर्ट स्कूल से अपनी सेवाएं प्रदान कर पुन: अपने जन्म स्थान इलाहाबाद चले गए एवं वही कला कार्य करने लगे जिसके बाद इनके शिष्य श्री रामगोपाल विजयवर्गीय द्वारा प्रिंसिपल पद पर नियुक्त होकर कला की बागडोर अपने हाथ में ली।

आपकी कलाकृतियां भारत कला भवन, बनारस,मैसूर के जगमोहन महल की चित्र गैलरी और पद्मश्री रामगोपाल विजयवर्गीय के निजी संग्रह में है।(10)आपने राजस्थान की मरुभूमि को अपनी कला से अभिभूत किया तथा वॉश तकनीक से परिचित करवाया। आपके उल्लेखनीय चित्र भारत कला भवन (वाराणसी), इलाहाबाद म्यूजियम, चित्रकला विभाग (इलाहाबाद वि.वि.) तथा वनस्थली विद्यापीठ में संग्रहित हैं।(11)

राजस्थान में बंगाल शैली से प्रेरित हो कई कलाकारों द्वारा कार्य किए

गया है व वाश पद्धति ने यहां अपना वर्चस्व भी स्थापित किया परंतु विद्यासागर उपाध्याय के अनुसार 'बंगाल स्कूल की परम्परा को राजस्थान ने बखूबी स्वीकार कर राज्य में कलाकारों ने प्रभावी कार्य किया है किंतु स्वर्गीय चित्रकार रामगोपाल विजयवर्गीय के अतिरिक्त किसी अन्य कलाकार की राष्ट्रीय स्तर पर पहचान नहीं बन सकी।'(12) इनके अतिरिक अन्य कलाकारों के कार्यों का वाश तकनीक में विस्तार नहीं देखा गया है जिस कारण धीरे-धीरे इस विधा का अंत यहां देखने को मिलता है। वर्तमान में कलाकार पूर्णरूप से इस तकनीक में कार्य करते हुए नहीं मिलेंगे परंतु इस तकनीक से अछूते भी नहीं है।

अन्य चित्र

प्रतीक्षारत बिरहिनि नायिका



क्षितिंद्रनात मजुमदार (1891-1975)

उत्तर भारत के प्रमुख कला केंद्र के रूप में विकसित इलाहाबाद (अब प्रयागराज) संत कलाकार क्षितिंद्रनाथ मजुमदार के मार्गदर्शन में पल्लवित पुष्पित हुआ। जिस प्रकार से शैलेन्द्र नाथ डे के द्वारा राजस्थान में आधुनिक वाश तकनीक का मार्ग प्रशस्त हुआ उसी प्रकार से इलाहाबाद में क्षतिन्द्रनाथ मजूमदार द्वारा इस तकनीक में आगे कार्य किया गया और इसे जीवित रखा आपने अध्ययन व कार्यो से। ये अवनींद्रनाथ टैगोर के प्रधान शिष्यों और कला की पुनर्जागृति में योगदान देने वाले कलाकारों में अपनी प्रधान भूमिका रखते है। इनका जन्म 31 जुलाई, 1891 ईस्वी को पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के एक दूरस्थ गांव जगताई में एक बंगाल परिवार में हुआ था। बचपन में ही इनकी मां का स्वर्गवास हो जाने के कारण इनका पालन पोषण इनके पिता ने किया। प्रारंभिक शिक्षा गांव से ही प्राप्त कर 1905 ई में वे कोलकाता के गवर्मेंट स्कूल ऑफ आर्ट में शामिल हो गए, जहां इन्होंने 6 वर्ष अवनींद्रनाथ टैगोर के कुशल मार्गदर्शन में कला की शिक्षा प्राप्त की। '1912 और 1930ई तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में बतौर अध्यक्ष कार्य किया एवं यहां से 62 वर्ष की आयु से सेवानिवृत हुए।(13)

किशोरावस्था में ही क्षितिंद्रनाथ मजूमदार पर वैष्णव धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा, जो उनके घर में भी प्रचलित था। इस धार्मिक प्रभाव ने उनके चित्रों में गहरी छाप छोड़ी, क्योंकि मजूमदार, जो अब कृष्ण के भक्त बन चुके थे, मुख्य रूप से वैष्णव और साहित्यिक विषयों पर चित्रण करने लगे। मुख्य रूप से रामायण,महाभारत, कृष्ण लीला तथा चौतन्य महाप्रभु के आध्यात्मिक जीवन के चित्र विशेष उल्लेखनीय है। आपने आधुनिक वाश तकनीक के साथ अपनी निजी टेम्परा पद्धति में भी चित्रण किया। समय के साथ, वह टैगोर के शिष्य बने और उनकी देखरेख में कई तकनीकों का अध्ययन किया। उन्होंने राजपूत चित्रकला और अजंता की भित्तिचित्रों में रुचि विकसित की। इसके अलावा, जापानी वॉश तकनीक ने भी उन्हें बहुत प्रभावित किया। मजूमदार ने अपने चित्रों में टैगोर की शैली की नाजुक और लचीली रेखाओं को अजंता, राजपूत चित्रकला और पूर्वी एशियाई तथा जापानी तकनीकों के साथ मिलाकर उपयोग किया। उनके चित्रों में बारीक रेखाएँ, मद्धम रंग और सरल पृष्ठभूमि देखने को मिलती हैं। उनकी कलाकृतियाँ लम्बी आकृतियों, प्रवाही मुद्राओं और लयात्मकता से युक्त होती थीं।

फूल तोड़ती महिला



यह चित्र कलाकार की प्रतिभा के एक और पहलू को उजागर करता है। यद्यपि यह एक एकल कलाकृति है, फिर भी इसमें सफेद फूलों में सुदूर पूर्व का प्रभाव, वास्तुकला में राजस्थान के लघु चित्रों का प्रभाव, पहाड़ी लघु चित्रों की रोशनी और निश्चित रूप से बंगाल शैली का मार्गदर्शन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह चित्र फूलों को तोड़ने जैसे सरल दैनिक कार्य को भी रोमांटिक अंदाज में प्रस्तुत करता है।

बादलो पर नाचती अप्सराएं



यह चित्र पूर्वी कला चित्रों से स्पष्ट रूप से मिलता-जुलता है, विशेषकर शारीरिक बनावट के मामले में। आम धारणा के विपरीत कि अप्सराएँ हमेशा गोरी होती हैं, कलाकार ने कुछ महिलाओं को सांवली त्वचा वाली चित्रित किया है। इनमें से कुछ बंगाल की संथाल आदिवासी महिलाओं से भी मिलती-जुलती हैं, जो बंगाली कलाकारों के लिए प्रेरणा का निरंतर स्रोत रही हैं। यह रचना कांगड़ा के एक चित्र से भी मिलती-जुलती है, जिसमें गोपियाँ चाँदनी रात में कृष्ण को खोज रही हैं। आदि कई चित्रों का निर्माण इन्होंने वाश तकनीक में किया है।

चौतन्य महाप्रभु के जीवन प्रसंग की जो श्रृंखला तैयार की वह अत्यंत कारुणिक और मर्मस्पर्शी है। उदाहरण के लिए गुरू के द्वार पर , संत के रूप में, कृष्ण प्रेम में विभोर आदि। गीतगोविद के चित्रों की श्रृंखला में मुख्य रूप से इन्होंने राधा कृष्ण और गोप गोपियों के चित्रों की रचना की साथ ही मीरा तथा रूप गोस्वामी के अभिनव चित्रों की भी रचना की। इन चित्रों में वैराग्य भक्ति श्रृंगार संयोग वियोग कितने ही रूप वो भाव को देख जा सकता है।जैसे महाप्रभु का उदात्त समर्पण, विष्णुप्रिया, चरण श्रृंगार, चौतन्य महाप्रभु, रूपगोस्वामी और मीरा, सनातन भक्ति, जमुना, वैराग्य आदि।

इस प्रकार वॉश रंगांकन पद्धति से व जलरंग की टेम्परा पद्धति को शुद्ध रूप से प्रयुक्त करने वाले कदाचित वे पहले भारतीय चित्रकार थे। हल्का पीला, हरा, लाल और गेरुआ उनके प्रिय रंग थे। इन्होंने अपने चित्रों में वॉश तकनीक का प्रयोग किया जिसमें रेखाएं अजंता के भित्ति चित्रों की तरह कोमल और लय युक्त अंकित की व मुगल व राजपूत लघु चित्र परम्परा की तरह सूक्ष्म अलंकरण युक्त चित्रों का निर्माण किया जो इनकी विशेषताओं को दर्शाते हैं। वे अपने चित्रों में पात्रों के लंबे, लचीले और हवा में तैरते हुए जैसे शरीरों के लिए जाने जाते हैं। बारीक रेखाचित्रों, विस्तृत अलंकरणों और उच्च कोटि की सजीव मुद्राओं और भावों से युक्त स्थानिक रचनाएं क्षितिंद्रनाथ मजुमदार की सबसे विशिष्ट कृति बन गई।(16) नारी आकृतियों में उनके झुके हुए शीश, पतली लंबी मुड़ी उंगलियाँ और शरीर के मोड़-तोड़ इस दुनिया से परे, किसी परलोक की झांकी प्रस्तुत करती हैं। उदाहरणार्थ चित्रों में 'पालतू जानवर और नारी', 'चरण श्रृंगार', 'भक्ति और वैराग्य' हैं।'(17)

आपके प्रतिनिधी चित्र कोलकाता म्यूजियम, कोलकाता, भारत कला भवन, वाराणसी, नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली में सुरक्षित हैं।(18) आप मूल साधक होते हुए भी आधुनिक भारतीय कला के श्रेष्ठ प्रतिभाशाली कलाकारों में थे, जिनकी कलात्मक उपलब्धियां आज भी गरिमामय एवं मुखर दृष्टिगत होती हैं। प्रयागराज के श्याम बिहारी अग्रवाल क्षितिंद्रनाथ के प्रमुख शिष्यों में थे जो वर्तमान में उनकी कला परम्परा को आगे बढा रहे थे 80 वर्ष की उम्र में इन्होंने इस संसार से विदा ली। इन्हें 2025 में राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। आपके द्वारा भी कला के क्षेत्र में वाश तकनीक में अपना विशिष्ट योगदान दिया गया है। इनके अन्य प्रमुख चित्रों में है :

श्री चौतन्य



बुद्ध और सुजाता



अत: निष्कर्षत:, इन दोनों महान कलाकारों का योगदान इस मायने में अतुलनीय है कि इन्होंने 'स्वदेशी आधुनिकता' का एक ऐसा प्रतिमान स्थापित किया जो आज भी प्रासंगिक है। मजूमदार ने जहाँ कला को 'अंतर्मन की शांति' और भक्ति का पर्याय बनाया, वहीं शैलेंद्र नाथ डे ने उसे 'साहित्यिक गौरव, और क्षेत्रीय पहचान' के साथ जोड़ा। इन दोनों की कलात्मक यात्रा यह सिद्ध करती है कि वास्तविक आधुनिकता अपनी सांस्कृतिक विरासत को पहचानने और उसे एक नई, कोमल और परिष्कृत अभिव्यक्ति देने में ही

निहित है। इन्होंने अपने कार्यों के द्वारा आगे आने वाली पीढ़ी को भारतीय कलात्मक विशेषताओं से रूबरू कराया एवं इन्हीं विशेषताओं के साथ चित्रों के निर्माण के लिए प्रेरित किया। साथ ही अपनी धार्मिक भारतीय संस्कृति को भी जीवित रखा। जिसके कारण आज वर्तमान में भी हमारे कलाकारों के द्वारा भारतीय धार्मिक एवं साहित्यिक विषयों पर चित्रण कार्य विशेष रूप से किया जा रहा है एवं आगे भी किया जाता रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. गुर्टू,शची रानी, कला दर्शन, साहनी प्रकाशन, दिल्ली, 1653
2. आकृति, राजस्थान कि कलाधाराए विशेषांक, जनवरी – मार्च,1997, पेज न. 1
3. प्रताप,रीता,भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी,जयपुर, पेज न.333
4. चतुर्वेदी,ममता:समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पेज नंबर 59
5. प्रताप,रीता,भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी,जयपुर, पेज न.332
6. चतुर्वेदी,ममता: समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पेज नंबर 60
7. प्रताप,रीता,भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी,जयपुर, पेज न.333
8. चतुर्वेदी,ममता: समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पेज नंबर 60
9. आकृति, राजस्थान कि कलाधाराए विशेषांक, जनवरी – मार्च,1997, पेज न.34
10. प्रताप,रीता,भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी,जयपुर, पेज न.333
11. theheritagelab.in
12. प्रताप,रीता,भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी,जयपुर, पेज न.334
13. चतुर्वेदी,ममता: समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पेज नंबर 59
14. dagworld.com
15. hlttps://indianculture.gov.in/
16. https://www.theheritagelab.in/kishindranath-majumdar/
17. mutualart.com
18. tallengestore.com
19. अवधेश मिश्र,बंगाल स्कूल की चित्रकला और उत्तर भारत,विश्व रंग,अक्टूबर –दिसंबर 2021

****